पोलियोमुक्त भारत और पोलियो के टीके का भविष्य

पिछला वर्ष पोलियो उन्मूलन अभियान के लिए एक महत्त्वपूर्ण वर्ष रहा है। इस वर्ष भारत से पोलियो का एक भी मामला रिपोर्ट नहीं हुआ। पोलियो के खिलाफ चला यह लंबा अभियान अब एक निर्णायक सवाल से जूझ रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के कार्यकारी मंडल से कहा जाने वाला है कि अब उस टीके को दफन कर दिया जाए जो 1988 से आज तक दुनिया में पोलियो के मामलों में 99 प्रतिशत की कमी लाया है। इसका मकसद यह है कि इस टीके को पोलियो फैलाने से रोका जा सके। ऐसा ही फैसला चेचक उन्मूलन के बाद चेचक के टीके के मामले में भी लिया गया था, हालांकि आज तक अलग-अलग कारण बताकर उसे नष्ट नहीं किया गया है।

वैज्ञानिक वर्ष 2000 से ही चेतावनी देते आए हैं कि पोलियो उन्मूलन का आखरी दांव पेचीदा होगा। इस बीमारी के खिलाफ संघर्ष ट्रायवेलेंट ओरल पोलियो टीके की मदद से चला है। इस ट्रायवेलेंट टीके में पोलियो की तीन किस्मों के दुर्बल वायरस हैं। टीके के पीछे विचार यह था कि दुनिया से कुदरती वायरस का सफाया कर दिया जाए, और ऐसा हो जाने पर टीके का उपयोग रोक दिया जाए।

मगर टीके में उपस्थित वायरस आज भी पर्यावरण में मौजूद हैं और कुछ ऐसे व्यक्तियों में भी वास करते हैं जो जीर्ण संक्रमण के शिकार हैं। ये 'टीका वायरस' पुनः रोग उत्पन्न करने की क्षमता हासिल कर सकते हैं। यह बात हैटी और डोमिनिकन रिपब्लिक में फैली महामारी में उजागर हुई है।

एक अन्य टीका इंजेक्शन के रूप में लगाया जाने वाला आईपीवी है जिसमें मृत वायरस का उपयोग किया जाता है। मगर यह बहुत महंगा है। इसलिए इसके विकल्पों की खोज जारी है। इस मामले में तीन बातें महत्त्वपूर्ण हैं।

पहली बात तो यह है कि पोलियो के निदान परीक्षणों में काफी तरक्की हुई है। इन परीक्षणों से पता चला है कि टीकाजनित जितने वायरस अभी मौजूद हैं, वे लगभग सारे के सारे टाइप 2 के हैं। कुदरती टाइप 2 तो 1999 में ही खत्म हो चुका था। लिहाज़ा टाइप 2 का एकमात्र स्रोत अब टीका ही है।

दूसरी बात यह है कि अब एक नया टीका उपलब्ध है, जिसे बायवेलेंट पोलियो टीका कहते हैं। इसमें टाइप 1 व टाइप 3 के वायरस हैं। इस टीके का विकास इसलिए किया गया है क्योंकि यह देखा गया था कि जिन बच्चों को ट्रायवेलेंट टीका दिया गया था, उनमें मुख्यतः टाइप 2 के विरुद्ध प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया उभर रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के पोलियो उन्मूलन के प्रमुख ब्रूस आयलवार्ड संगठन से अनुरोध करने वाले हैं कि गरीब देशों में ट्रिपल टीके की जगह डबल टीका लागू किया जाए, बशर्ते कि अफ्रीका में टीका जनित महामारी पर नियंत्रण हासिल कर लिया जाए। इससे टाइप 2 को पर्यावरण में पहुंचने से रोका जा सकेगा।

और तीसरी बात यह है कि अब आईपीवी को लगाने का एक नया तरीका विकसित कर लिया गया है जिसके चलते यह टीका उतना महंगा नहीं रह गया है। यह इंजेक्शन अब मांसपेशियों में नहीं बल्कि त्वचा में लगाया जाता है।

इन बातों के मद्देनज़र अब कार्यकारी मंडल को फैसला करना है कि क्या रणनीति अपनाई जाए। ***(स्रोत फीचर्स)***